



जीव का धर्म युद्ध

1. धर्म युद्ध संसार का,
अन्दर, बाहर होय ।

इसे जीतना जीव को,
तब यह आत्म होय ॥

2. सात लोक हैं ब्रह्म के,
सात स्वर्ग हैं देव ।

सात समुन्दर प्रथम में,
सब से पार जो होय ॥

3. तत्वों से है निकलना,
नहीं समाना तत्व ।

पाँच तत्व से निकलकर,
होना जीव अतत्व ॥

4. सीता समानी भूमि में,
जल समाधि लिया राम ।

भरत, शत्रुघ्न साथ में,
लक्ष्मण अग्नि से प्राण ॥

5. गले हेवारे पांडवा,

कृष्ण के लागा बाण ।

सत्य कभी मरता नहीं,

खोजो पद निर्वाण ॥

6. जन्म कहीं, राजा कहीं,

मुख्य यही है भेद ।

यही लगावो जीव में,

राजा जीव अभेद ॥

7. राम अयोध्या से ओरछा,
मथुरा से द्वारिका कृष्ण ।

परिधि से केन्द्र पे जीव हो,
राजा बने तुरन्त ॥

8. जीव के मूल को खोज लो,
मूल सीधना सीख ।

बिन माँगे मोती मिले,
माँगे मिले न भीख ॥

9. केवल चार लोक में,
महाभागवत सार ।
- चार का सार है एक में,
एक का भी है सार ॥
10. चार लोक ही मुख्य हैं,
चौथा लोक है सार ।
- भेद जानना एक का,
वही सार का सार ॥

11. कोटि सहस्र में,

सुनहु पुरारी ।

कोय एक होय,

सत्य व्रत धारी ॥

12. लाभ कौन हैं सत्य से,

पहले सुनो खगेश ।

राजा तुरत ही जीव हो,

राजा सदा खगेश ॥

13. प्रकट है करना आत्मघट,

कहें इसे अवतार ।

राम, कृष्ण कहते इसे,

यही सभी का सार ॥

14. मायाधीस जीव हो,

जीव बने जगदीश ।

परिधि से आना केन्द्र पर,

मन सन्मुखता सीख ॥

15. छोड़ो मन की अकड़ को,
माया और अभिमान ।

मानों सद्गुरु वचन को,
सहज, समर्पण ठान ॥

16. पानी में नाव रहे जैसे,
मन राखो ऐसे माया में ।

माया में मन लिप्त न हो,
काम करो सब काया में ॥

17. माया में डूबों नहीं,

माया व्याप्त न होय ।

मन में माया हो नहीं,

मन निर्मल तब होय ॥

18. मन की संगत होय जस,

रंगत वैसी होय ।

मन को राखो सत्य संग,

माया चेरी होय ॥

19. जिसके सन्मुख जाय मन,
रूप वही होय जाय ।

वही चित्र मन पर बने,
कर्म में वह लिख जाय ॥

20. कर्मों का संसार यह,
जो चाहो सो पाय ।

मन पर चित्र बनायकर,
जो सोचो वह पाय ॥

21. जो चाहो संसार में,
यह मन वहीं पे जाय ।

वही चित्र मन पर बने,
वह संसार में पाय ॥

22. भाग्य हैं बनते कर्म से,
कर्म से जीव महान ।

मन की दृष्टि संभाल लो,
जीवन सफल महान ॥

23. पहले सद्गुरु खोजकर,

नामदान को लेव ।

माया से मन पार हो,

सन्मुख मन करि लेव ॥

24. काया दृष्टि सहजकर,

माया दृष्टि छोड़ ।

दृष्टि अनन्त की खोजकर,

माया से मन मोड़ ॥

25. सहज दृष्टि, मन सहजकर,

मन सन्मुख करि लेव ।

आतमघट को प्रकटकर,

परमधार लखि लेव ॥

26. सत्य धार भागीरथी,

असली गंगा होय ।

जीव इसी से मुक्त हो,

अब जानों सब कोय ॥

27. पाँच हजार साल गये,
गंगा पृथ्वी से लुप्त ।

अब खोजो सत धार को,
जो है अभी विलुप्त ॥

28. भक्ती चार प्रकार की,
धार, नाद और नूर ।

एक भक्ति संसार की,
मृति, चित्र, मन पूर ॥

29. सत्य भक्ति तो धार है,
मिथ्या नाद और नूर ।

मृति, चित्र संसार के,
अंकित मन भर पूर ॥

30. चारों भक्ती पूर्ण हो,
केवल एक ही धार ।

आत्मघट परगाट करो,
तुरत मिले यह धार ॥

31. सबसे बड़ा है “ सन्तमत ”

उसमें बहुत है पंथ ।

“सत्य” एक को खोजना,

अलग-अलग हैं पंथ ॥

32. “जीव” को आना केन्द्र पर,

जीव को बनना “आत्म” ।

इस छोटी सी बात को,

कहते हैं अद्यात्म ॥

**33. केवल “सत्य” को खोजकर,
“मन सन्मुख” करि लेव ।
तुरत जीव, आत्म बने,
तीन लोक को लेव ॥**

**34. अलग-अलग सबने कहा,
एक सत्य के नाम ।
वैष्णव मत में “राम” है,
सन्तमत में है “नाम” ॥**

35. कबीर पंथ “साहब” कहा,
“सतगुरु पंथ” कहा “धार” ।

साई पंथ “साई” कहा,
सत्य एक है सार ॥

36. इतने योजन ऊपर कहा,
बाबा जयगुरुदेव ।

राधा स्वामी ने अन्दर कहा,
सात लोक का भेव ॥

37. सतगुरु पंथ ने अपरोक्ष कहा,

आतमघट के तीर ।

धार, सार और सत्य है,

जो जाने वह वीर ॥

38. राम कथा, सत्संग में,

अन्तर क्या है जान ।

किया राम ने कथा वह,

मिले राम, वह सत्संग जान ॥

39. सत्संग “सतगुरु-पंथ” का,

तुरत मिलावै राम ।

नामदान जैसे मिला,

तुरत मिल गया राम ॥

40. परमधार, परमात्मा,

आत्म विद्या जान ।

अनहदनाद, प्रकाश को,

ब्रह्म विद्या मान ॥

41. ब्रह्म विद्या संसार की,
आत्म विद्या सार ।

आत्म विद्या से मिले,
हर युग का अवतार ॥

42. आत्म विद्या जानकर,
मन पूर्ण करि लेव ।

पूर्ण मन से सब मिले,
जो सोंचो सब लेव ॥

43. सद्गुरु का उपदेश है,
आत्म विद्या सार ।

जीव परिधि से केन्द्र पर,
माया से हो पार ॥

44. मन प्रण, हंसा हुआ,
मोक्ष, मुक्ति सब द्वार ।

जीव तुरत आत्म हुआ,
देव, ब्रह्म सब द्वार ॥

45. जहाँ फंसे हो, छोड़ि सब,

आत्म विद्या लेव ।

सद्गुरु का उपदेश यह,

“परमधार” लखि लेव ॥

46. न स्वर्ग का लालच,

न नरक का डर दे ।

सद्गुरु वही है,

जो मन पूर्ण कर दे ॥

47. ध्यान, भजन छोड़ाय सब,

मन सन्मुख कर दे ।

सदगुरु वही है,

जो मोक्ष, मुक्ति कर दे ॥

48. क्रिया, कर्म छोड़ाय सब,

मन को सहज कर दे ।

करना कुछ पड़े नहि,

केन्द्र पर कर दे ॥

49. देव, ब्रह्म छोड़ाय सब,

परमधार कर दे ।

निर्गुण, सगुण से पार कर,

अपरोक्ष हमें कर दे ॥

50. माँगा बहुत दिनों तक,

दाता हमें कर दे ।

सबकी शरण गही अब तक,

सबको मेरी शरण कर दे ॥

51. बीच में माया थी अब तक,

इसलिए हम थे अलग ।

बोध आत्म का हुआ,

माया हटी हम एक हैं ॥

52. बहुत को थे खोजते,

जाना अब, वह एक है ।

एक को भी लख लिया है,

सतगुरु एक धार है ॥

सुरेशा दयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान मौवकला

विस्वाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)